Anveshan (अन्वेषण): A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 1, Issue 1 - 2017

सांस्कृतिक पर्यटन का यात्रा–साहित्य पर बढता प्रभाव: परिवेश एव परिप्रेक्ष्य

डॉ. कल्पना मौर्य*

यात्रा मानव जीवन का अभिन्न अंग है इससे जीवन आनंदमयी, चेतनामयी, और अनुभव सम्पन्न बन जाता है एक स्थान से दूसरे स्थान जाने से गतिशीलता आती है। अब तक जो साहित्य लिखा गया उसमें यात्रा साहित्य निर्विवाद रूप से एक नीवन विधा है। यह बहुत दिनों तक निबंध, संस्मरण, रेखाचित्रों का यात्रा साहित्य एक विद्या के रूप में जिसमें निबंध, संस्मरण, रिपोतार्ज, रेखाचित्र, कथा पत्र साहित्य, डायरी साहित्य आदि लिखने में यात्रा साहित्य में अपनी शक्ति के अनुरूप इसमें अनेक वैशिष्टय, न्यूनाधिक यात्रा में तथा एक सीमा तक संभव है कि अन्य विधाओं के विशिष्टय या गुण सानाहित न हो यह संभव नहीं है। ये सभी एक दूसरे का सहयोग करते हुये अपने स्वरूप का निर्वाहन करती है।

यात्रा साहित्य का रचना विधान और रचनातत्य

व्यक्ति की प्रकृति पर निर्भर उसकी कल्पनाशीलता, सौन्दर्य दृष्टि, संवेदना, ज्ञान राग्पदा, अनुभव और अभिव्यंजना की पद्धति ये कुछ ऐसे बुनियादी तत्व है, इस विधा की रचनाओ को आकार देते है। आत्मीयता के साथ स्थानिक विशेष्ताओं को लिये, तथ्यों के साथ, कल्पना प्रवण व रोचकता से लिखे गये यात्रा साहित्य अधिक होते है।

आधारभूत तथ्य

स्थान विशेष के समग्र वैभव उसके प्राकृतिक सौन्दर्य, रीतिरिवाज आचार–विचार, आमोद प्रमोद, जीवन दर्शन आदि का सफल उगस्थापन होता है। दूसरा आधारभूत तत्व है तथ्यात्मक लेखक अपनी यात्रा के दौरान देखे गये स्थानों के संबंध में विभिन्न तथ्यों की प्रमाणिक जानकारी पाठको को देने का प्रयास करता है लेकिन यह जानकारी इतिहास या भूगोल की पुस्तको जैसी नीरस शैली में न होकर, रोचकता और कलात्मकता के साथ दी जाती है।

द्वितीय तत्व

वास्तव में ऐसे तत्व है, जो किसी यात्रा विवरण को साहित्य की विधा के साथ रचनात्मक धरातल पेरो है। इसमें आत्मीयता, लेखकीय व्यक्तित्व, कल्पना प्रवणता, चित्रात्मकता रोचकता यात्रा वृतान्त में इसका प्रयोग अलग से होता है।

आत्मीयता

आत्मीयता यात्रा–साहित्य को मर्मस्पर्शी बनाता है। उसकी आत्मीयता में उसका मन वहां की प्रकृति समाज संस्कृति और कला में उस स्थान के कण कण में रम जाता है। आंकेड़े और विज्ञपित्यो से दूर वह सौन्दर्य को, मानवीय आशा आकांक्षाओं से

*सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, आई एस ई मान्य वि. वि. सरदारशहर।
Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

पूरित जीवन को कला अभिरूचि और प्रकृति को प्राणक्ता के साथ उदघाटित करता है। यात्रा के मध्य होने वाली अनुभूतियों और मन पर पड़ने वाली छाप को प्रतिक्रियाओं को वह अपने साहित्य में आत्मीयता के साथ अंकित करता है।

लेखकीय व्यक्तित्वव प्रकृति

यात्रा साहित्य एक वैयक्तिकता प्रधान होने के कारण उसकी वैयक्तिकता, अभिरूचि दृष्टिकोण, ज्ञान संपदा से भरपूर रचना को गुणवता प्रदानकर अपनी अभिरूचि और दृष्टिकोण के अनुसार दृश्यों को देखता और चुनता है वह अपनी ज्ञान संपदा और जिज्ञासा के अनुसार ही जानकारी पिरोता है वह इस कसौटी पर खरा उतरकर अपनी क्षमता का सही प्रमाण देता है।

कल्पनाप्रवणता

कल्पना–प्रवणता यात्रा के समय लेखक कल्पना की जितनी गहराईयोंमें उतर सकेगा, वह उतनी ही गहनता से दृश्यों को देख सकेगा। कल्पना–प्रणवता के बिना अतीत को वर्तमान एंव अप्रत्यक्ष करने की सामर्थ्य कल्पना के कारण ही संभव है।

चित्रात्मकता

चित्रात्मकता और कल्पना प्रवणता एक दूसरे के सहायक है। कल्पना से यात्रा के स्थलों के रमणीय और जीवंत चित्र अपनी अभिव्यक्ति क्षमता से ऐसा वर्णन प्रस्तुत करता है कि सामने दृश्य उपस्थित हो जाते है। वह भाषा का ऐसा रचनात्मक उपयोग कर पाठक के सम्मुख वर्णित स्थल अपनी विम्बधर्मिता से सामने आ जाते है।

रोचकता

रोचकता लेखक अपनी रूचि और दृष्टि के अनुसार दंत कथाओं स्थान विशेष में मिलने वाले विचित्र तथ्यों, जनजीवन के विविध रंगो, नृत्य, लोककथा, वस्त्राभूषण, मकानों की बनावट को देखकर याद आने वाली कविताओं, कहानियों आदि का उल्लेख यात्रा वृतांन्त कौतुहल्पूर्ण, रूत्रिपूर्वक, जिज्ञासा उसकी सोद्देश्य रचना मनुष्य की ज्ञान वृद्धि में सहायक होती है। अपनी अलौकिक यात्रा पर्यटन साहित्यकार अपनी यात्रा वृत्तियों के माध्यम से मनोरंजन प्रदान करता है।

विश्व ब्रह्माण्ड संचरणशीलता के भाव से परिपूरित है। चाहे यात्रा उदरभरण व्यवसाय के कारण हो अथवा उसकी ज्ञान लालसा एवं अदम्य जिज्ञासा प्रवृत्ति से प्ररित हो।

यात्रा साहित्य रचना विधान और रचना स्वरूप इसके नि.लि. तत्व परिलक्षित हुये है।

संचरण शीलता

एक यह संचरणशीलता जल–थल और आकाश कही भी हो सकती है। जब किसी यात्रा वृतान्त को पढते समय पाठक भी सतत् रूप में लेखक की अनुभूत की गई संचरणशीलता से तादात्म्य स्थापित कर सके, तभी वह यात्रा साहित्य की कोटी में माना जायेगा।

वस्तुनिष्ठ अथवा तथ्यात्मक दृष्यांकन

हमारी दृष्टि से यात्रा साहित्य के अन्तर्गत संरचरशीलता के बाद दूसरा अनिवार्यतत्व उसकी वस्तुनिष्ठता अथवा तथ्यात्कता है इसका अर्थ है संचरणशीलता कोरी कल्पना विलास नहीं हो तो जैसे अतीद्रिय शुक्ष्म, रहस्यमय संचरण है इस विधा का संचरण नितान्त वस्तुनिष्ठता की भित्ति पर उकेरा हुआ होता है।

संवेदनशीलता

ये संवेदनायें बहुआयामी लेखक के व्यक्तित्व पर निर्भर करती है। जो लेखक अपनी

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

यात्रा के स्थान, दृश्य, वस्तु, व्यक्तिभाव और व्यवहार के प्रति पाठक तक जितनी मात्रा में संप्रेषित करने में सफल होगा वह अपने यात्रा वृतांन्त को उतनी ही मात्रा में साहित्यिक रूप प्रदान कर सकेगा।

उद्देश्य

कोई भी लेखन निरूद्देश्य नहीं होता । हर लेखक अपने पाठ कतक कुछ सप्रेष्य करना चाहत। है। वह अपने अनूठे, अनोखे अनुभवों में अपने पाठक को सहभागी बनाना चाहता है। जो प्रत्यक्ष यात्रा के समय भयप्रद, कष्टदायक थे लिखते समय आनंदाभूति प्रदान करते है। दूसरी और अनुभवों की संप्रेषणीयता उसके पाठक को एक और ज्ञान सम्पन्न बनाती है, तो दूसरी ओर उसका मनोरंजन भी करती है। उसे आन्नद प्रदान करती है। तीसरा यात्रा साहित्य लेखक और पातक एक ओर विश्व नानव समुदाय से एकात्मकता का अनुभव करता है तो दूसरी ओर प्रकृति की विशालता और उदारता से भी संप्रक्त हो कर अपनी रांकुचित वृत्ति के बंधनों से मुक्ति पाने का सुख पाता है।

प्राकृतिक सौन्दर्य

लेखन में प्रकृति के इस विविधता भरे रूपों का प्रत्ययकारी वर्णन के कारण कविता का अनंद और उल्लास आ जाता है। प्रकृति एक उदेश्य परक या गुरू मित्राय सखा के रूप में मिलकर विविध रंग–गंधभरी मनभावन स्थिति स लेखक का साक्षात्कार होता है। वह गंध वही तरंग वही उल्लास व्यक्ति के मन को समृद्ध कर मन को भी समृद्ध कर देते है।

इतिहास बोध

इतिहास का ज्ञान इस प्रदेश की यात्रा, भूगोल, इतिहास ऐतिहासिक चरित्रों के स्पर्श केवल राजा महाराजाओं का सन् सवत का लेखाजोखा ही नही उनकी जीवनशैली का परिचय जन सामान्य का जीवन उसकी प्रेरणा, वास्तु महलगढ, किला, सरोवर वृक्ष इतिहास बोध को समझकर यात्रा की जयेगी तो नये–नये संदर्भ सामने आयेगे।

सांस्कृतिक पर्यटन का साहित्य यात्रा पर बढता प्रभाव

नृत्य और संगीत

राजस्थान सदैव से अपनी कला और संस्कृति विषयक प्रवृतियों में अग्रसर रहा है। नृत्यकला में राजघरानो की परम्परा का निर्वाह अपने मौलिक रूप ने है। राजस्थान नृत्य विकास भारत के विकास से जुड़ा होने के साथा ही अपनी भौगोलिक विषमताओं के रहते राजाओं में भी विभिनन प्रवृतियों कला के उतार चढाव में सहायक रही है।

नृत्य के इतिहास पर यदि दृष्टिपात करे तो सबसे पहले भरत ने देवो को आनदित करने के लिए एक नाटिका प्रस्तुत की। शिवपार्वती ने प्रसन्न होकर तांडु गण को भरत द्वारा ताण्डव नृत्य में पारंगत किया। बाण की पुत्री ऊषा को पार्वती ने, ऊषा ने द्वारका की अन्य स्त्रियों को यह नृत्य कला सिखाई है।ऋग्वेद में नृत्य का प्रसंग, वैदिक युग में विराट द्वारा बहा नाल की संगीत नृत्य शिक्षक द्वारा सीखना, भरत द्वारा रचित नाट्यशास्त्र ही नृत्यकला का प्रथम प्रमाणिक ग्रंथ उपलब्ध है।

राजस्थान में नृत्य और संगीत जैसी ललित कलाओं का प्रादुर्भाव 15 वीं शताब्दी के पूर्व तक पातर प्रथा का बोलबाला राजाओ, जागीरदारों और सेठो को प्रसन्न करने के उददेश्य से किया गया। अंग्रेजी प्रभुसत्ता ने सगीत और नृत्याकारों को अपनी विलासिता के लिये उपयोग किया। जयपुर का राजघराना तो समस्त भारत में प्रमुख

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.

स्थान रखता है। आज भी नृत्यकार दिल्ली मुम्बई में इन कलाओं के प्रमुख केन्द्र बने हुये है।

किले दूर्ग, महल, स्मारक एवं संग्रहालय का भ्रमण

भ्रमण करते समय पूर्ण एवं वास्तविक सूचनाऐं दें। इतिहास से जूड़ी सारी महत्वपूर्ण घटनाओं, स्थापत्य सौन्दर्य सही तथ्यों से पूर्ण जानकारी दें। इससे शोधकार्य कर रहें शिक्षार्धियों को सही आंकड़े और तथ्य संग्रहित करने में मदद मिलती है। ऐतिहासिक स्थलो, संग्रहालयों, में विपिध्य क्षेत्रों में न जायें। उन वस्तुओं को सिर्फ देखें छूने की कोशिश कर उन्हे नुकसान न पहुचांये।

वन्य जीव पर्यटन

वन्य जीव, वनस्पतियां, पेड़ पौधे, वन्य जड़ी बुंटीयां, फल फूल बियावान जंगल आदि के बारे में पूरी जानकारी होने पर भी यदि सम्प्रेषण सही नहीं होने से पर्यटकों को गाईड संतुष्ट नहीं कर पाता है। (मीरा मुक्तावली नरोनम दास स्वामी प्र.3 सहित्यगार संस्करण 2008 जयपुर) राष्ट्रीय उद्यान, वन्यजीव विहार, सेंचुरी आदि के खुलने और बंन्द होने के निधांरित समय को ध्यान में रखने खान–पान के लिये ली जाने वाली आवश्यक वस्तुओं को बताना चाहिए

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1]. नामवर सिंह, आलोचना–जूलाई पृ 11. 12.
[2]. सुरेन्द्र माथुर–हिन्दी यात्रा साहित्य का उद्‌भव और विकास पृ 2.
[3]. हिन्दी साहित्य कोश लोक भारती प्रकाशन 10 वां संस्करण 2002.
[4]. आरेयायावर रहेगा याद'' अज्ञेय– पांचवा संस्करण की भूमिका पृ 7.
[5]. डा. राजेश कुमार व्यास राजस्थान में पर्यटन प्रबन्ध, प्राक्कथन।
[6]. वीणा स्वर सरिता–कला संस्कृति और पर्यटन की मासिक पाक्षिक सम्पादक स्वर सरिता बीणा प्रकाशन प्रधान सम्पादन के. सी. मालू पृ 22.
[7]. डॉ. प्रकाश मोकाशी–यात्रा साहित्य, परिवेश एवं परिप्रेक्ष्य यनिवर्सिटी बुक हाऊस जयपुर प्रथम संस्करण 2007 पृ. 26.

© Eureka Journals 2017. All Rights Reserved.